लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

आँचल

अंक:15 वाँ एवं 16 वाँ संयुक्तांक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई-400051

आँचल

विभागीय गृह-पत्रिका
अंक: (15वां और16वां) संयुक्तांक

आँचल परिवार

संरक्षक
श्री पी. वी. हरि कृष्णा
प्रधान निदेशक

प्रबंध संपादक
श्री वी. एस. के. नम्बूदिरी
उप निदेशक (प्रशासन)

परामर्शदाता
श्री एस. एस. शिवकामेश्वरन
निदेशक (रिपोर्ट)

संपादन सहयोग
श्री पियुष रामटेके, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अमित कुमार सिन्हा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल
श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
श्रीमती प्रीति, आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर)- "आँचल" पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कवितायें तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

प्राक्कथन

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई द्वारा प्रकाशित विभागीय गृह-पत्रिका **"आँचल"** का यह अंक राजभाषा हिंदी की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

पत्रिका के पिछले अंकों के संबंध में भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से पत्र प्राप्त हुए हैं, जो "आँचल" द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार किए जाने का एक सुंदर उदाहरण है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण योगदान करेगी तथा कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करेगी।

मैं संपादक मण्डल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। मैं हृदय से कामना करता हूँ कि **"आँचल"** इसी सहजता एवं सरलता से हिंदी का प्रचार-प्रसार करती रहे।

(पी. वी. हरि कृष्णा)
प्रधान निदेशक

संदेश

इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही विभागीय गृह-पत्रिका **"आँचल"** का उद्देश्य कार्मिकों सहित सभी पाठकों के मन में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव को प्रोत्साहन देना है। कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका-प्रकाशन हेतु रचनायें प्रस्तुत करने में जो उत्साह दर्शाया गया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रगति सुनिश्चित करना ही इसका मूल उद्देश्य है।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी कार्यालय के सभी कर्मचारी पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं अपने कार्य से भी संबंधित लेख आदि लिखकर पत्रिका को उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का प्रयास करेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(वी. एस. के. नम्बूदिरी)
उप निदेशक (प्रशासन)

शुभकामना

यह हमारे लिए अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि इस कार्यालय की विभागीय हिंदी गृह-पत्रिका **"आँचल"** का (15वाँ व 16वाँ) संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका लगातार कार्मिकों को वैचारिक अभिव्यक्ति का एक सुंदर मंच प्रदान करती रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी बहुमूल्य रचनाएँ प्रदान करने वाले सभी कर्मचारी एवं अधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उनके मनोबल को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित।

(एस. शिवकामेश्वरन)
निदेशक (प्रतिवेदन)

संपादकीय

जय राम सिंह
(क. अनुवादक)

भाषा एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है। उसका सम्मान और यश बढ़ाती है। राष्ट्रीय संवेदना भी राष्ट्रभाषा से ही उन्नत होती है। जो भाषा इस राष्ट्र के मूल भाषा से उत्पन्न होकर जन-सामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गयी वही भाषा हमारी राजभाषा हिंदी है। भारत जाति, धर्म, रूप, रंग, भाषा कई प्रकार की विविधताओं से परिपूर्ण देश है एवं हिंदी सदैव से इस विविधता में एकता की सूत्रधार रही है। हिंदी हमारे देश के जन सामान्य की भाषा है और लोग इसमें अपने विचारों की अभिव्यक्ति सहजता से करते हैं। इसलिए सरकार के काम-काज एवं संवाद को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए।

मेरा यह विश्वास है कि इस कार्यालय की विभागीय गृह-पत्रिका **"आँचल"** के इस अंक के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन के कार्य को अवश्य ही गति मिल रही है। कार्मिकों में भी हिंदी के प्रति एक विशेष उत्साह का संचार हो रहा है। पत्रिका के रचनाकार किसी भी रूप से प्रतिष्ठित लेखक या कवि नहीं हैं परंतु उनके द्वारा हिंदी के प्रति प्रेम को विभिन्न विधाओं की रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है जो कि अति प्रशंसनीय है। आशा करता हूँ कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को रुचिकर लगेंगी। कार्यालय में विभिन्न अवसरों पर संकलित छायाचित्रों को भी पत्रिका में प्रकाशित किया गया है जिसे पाठक गण अवश्य पसंद करेंगे। इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपने योगदान से पत्रिका को पठनीय बनाकर अनुगृहीत किया है। मेरा यह विश्वास है कि आप सुधी पाठक अपने महत्वपूर्ण सुझावों से अलंकृत कर पत्रिका को और अधिक उपयोगी, आकर्षक एवं तकनीकी रूप से सुसंगठित बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	श्री पी. वी. हरि कृष्णा	3
2.	शुभकामना	श्री वी.एस.के.नम्बूदिरी	4
3.	संदेश	श्री एस.एस.सिवकामेश्वरन	5
4.	संपादकीय	श्री जय राम सिंह	6
5.	अनुक्रमणिका		7
6.	भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि श्रृंखला	हिंदी प्रकोष्ठ	8-13

गद्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आधुनिक जीवन शैली और नैतिक मूल्य श्रृंखला	श्री नित्यानन्द पाठक	14-15
2.	कार्य क्षमता बनाम कार्य इच्छाशक्ति	श्रीमती रितु मोटवानी	16-17
3.	कहानी चटपटे चिकन की	श्री जिज्ञासु पन्त	18-19
4.	दुनियादारी बनाम शिक्षा	श्री अमित कुमार सिन्हा	20-23

काव्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आओ हिन्दी को अपनाएँ	श्री जय राम सिंह	24
2.	कन्फर्म टिकट	श्री अमित कुमार सिन्हा	25
3.	किसान	श्री अभिनन्दन अग्रवाल	26-27
4.	जीवन-दर्पण	श्री अभिनन्दन अग्रवाल	28
5.	जिंदगी	श्री अभिनन्दन अग्रवाल	29
6.	जल ही जीवन है	सुश्री वी. सरला	30
7.	वक्त	श्रीमती रितु मोटवानी	31
8.	सूरत भगवान की	श्री अंकित शर्मा	32
9.	नज़र	श्रीमती रूपराशि	33
10.	Views	श्रीमती रूपराशि	34
11.	जय हो हिन्दुस्तान की	श्री जय राम सिंह	35
12.	लक्ष्य की प्यास	श्री एस. सुरेश	36
13.	कराह और करवट- जनशक्ति की	स्वर्गीय श्री महीप-प्रशांत "प्रशांत नदीश के सीप" से उद्धृत	37-39

अन्य

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आपके पत्र	पाठकों से	40-42
2.	राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 संबंधी विशिष्ट प्रावधान	हिंदी प्रकोष्ठ	43-44
3.	राजभाषा हिंदी की प्रगति की समीक्षा	हिंदी प्रकोष्ठ	45-46
4.	विविधा	हिंदी प्रकोष्ठ	47-51

भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि

भारत के महान सपूत एवं राष्ट्र हित में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले महान स्वतन्त्रता सेनानियों की श्रृंखला आँचल के द्वादशम् अंक से आरंभ की गई थी। यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि हमें अपनी पत्रिका के माध्यम से अपने महान राष्ट्रनायकों को श्रद्धा सुमन अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस कड़ी में यह कार्यालय श्रद्धांजलि स्वरूप हमारे प्रिय अशफ़ाक़ उल्ला खान से संबंधित स्मृतियों को प्रस्तुत कर रहा है-

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का जन्म उत्तर प्रदेश के शहीदगढ़ शाहजहाँपुर में रेलवे स्टेशन के पास स्थित कदनखैल जलालनगर मुहल्ले में 22 अक्टूबर 1900 को हुआ था। उनके पिता का नाम मोहम्मद शफीक उल्ला ख़ाँ था। उनकी माँ मजहरुन्निशाँ बेगम सबसे खूबसूरत स्त्रियों में गिनी जाती थीं एवं एक संपन्न परिवार से ताल्लुक रखती थीं। अशफ़ाक़ ने स्वयं अपनी डायरी में लिखा है कि जहाँ एक ओर उनके बाप-दादा के खानदान में एक भी ग्रेजुएट होने तक की तालीम न पा सके वहीं दूसरी ओर उनकी ननिहाल में सभी लोग उच्च शिक्षित थे। उनमें से कई तो डिप्टी कलेक्टर व एस० जे० एम० (सब जुडीशियल मैजिस्ट्रेट) के ओहदों पर मुलाजिम भी रह चुके थे। 1857 के गदर में उनके ननिहाल वालों ने जब हिन्दुस्तान का साथ नहीं दिया तो जनता ने गुस्से में आकर उनकी आलीशान कोठी को आग के हवाले कर दिया था। वह कोठी आज भी पूरे शहर में जली कोठी के नाम से मशहूर है। अशफ़ाक़ ने अपनी कुर्बानी देकर ननिहाल वालों के नाम पर लगे उस बदनुमा दाग को हमेशा- हमेशा के लिये धो डाला। अशफ़ाक़ अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। सब उन्हें प्यार से अच्छू कहते थे। एक दिन उनके बड़े भाई रियासत उल्ला ने अशफ़ाक़ को बिस्मिल के बारे में बताया कि वह बड़ा काबिल शख्स है और आला दर्जे का शायर भी, लेकिन आजकल मैनपुरी काण्ड में गिरफ्तारी की वजह से शाहजहाँपुर में नजर नहीं आ रहा। काफी अर्से से फरार है। खुदा जाने कहाँ और किन हालात में बसर करता होगा। अशफ़ाक़ तभी से बिस्मिल से मिलने के लिये बेताब हो गये। 1920 में राम प्रसाद बिस्मिल शाहजहाँपुर आये और घरेलू कारोबार में लग गये एक रोज रात को खन्नौत नदी के किनारे सुनसान जगह में मीटिंग हो रही थी। अशफ़ाक़ वहाँ जा पहुँचे। बिस्मिल के एक शेर पर जब अशफ़ाक़ ने आमीन कहा तो बिस्मिल ने उन्हें पास बुलाकर परिचय पूछा। यह जानकर कि अशफ़ाक़ उनके क्लासफेलो रियासतुल्ला का सगा छोटा भाई है और उर्दू जुबान का शायर भी

है, बिस्मिल ने उससे आर्य समाज मन्दिर में आकर अलग से मिलने को कहा। घर वालों के लाख मना करने पर भी अशफ़ाक़ आर्य समाज मन्दिर जा पहुँचे और राम प्रसाद बिस्मिल से काफी देर तक गुफ्तगू करने के बाद उनकी पार्टी मातृवेदी के ऐक्टिव मेम्बर भी बन गये। यहीं से उनकी जिन्दगी का नया फलसफा शुरू हुआ ।

वे शायर के साथ-साथ कौम के खिदमतगार भी बन गये। राम प्रसाद बिस्मिल की भाँति अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ भी उर्दू भाषा के बेहतरीन शायर थे । उनका उर्दू तखल्लुस, जिसे हिन्दी में उपनाम कहते हैं, हसरत था । उर्दू के अतिरिक्त वे हिन्दी व अँग्रेजी में लेख एवं कवितायें भी लिखा करते थे। उनका पूरा नाम अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ वारसी हसरत था। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सम्पूर्ण इतिहास में बिस्मिल और अशफ़ाक़ की भूमिका निर्विवाद रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता का अनुपम आख्यान है । एक रोज का वाकया है - अशफ़ाक़ आर्य समाज मन्दिर शाहजहाँपुर में बिस्मिल के पास किसी काम से गये । संयोग से उस समय अशफ़ाक़ जिगर मुरादाबादी की यह गजल गुनगुना रहे थे- "कौन जाने ये तमन्ना इश्क की मंजिल में है। जो तमन्ना दिल से निकली फिर जो देखा दिल में है।" बिस्मिल यह शेर सुनकर मुस्करा दिये तो अशफ़ाक़ ने पूछ ही लिया-"क्यों राम भाई! मैंने मिसरा कुछ गलत कह दिया क्या?" इस पर बिस्मिल ने जबाब दिया- "नहीं मेरे कृष्ण कन्हैया! यह बात नहीं है। मैं जिगर साहब की बहुत इज्जत करता हूँ, मगर उन्होंने गालिब की पुरानी जमीन पर घिसा पिटा शेर कहकर कौन-सा बडा तीर मार लिया। कोई नयी रंगत देते तो मैं भी इरशाद कहता।" अशफ़ाक़ को बिस्मिल की यह बात जँची नहीं; उन्होंने चुनौती भरे लहजे में कहा- "तो राम भाई! अब आप ही इसमें गिरह लगाइये, मैं मान जाऊँगा आपकी सोच जिगर और गालिब से भी ऊँचे दर्जे की है।" उसी वक्त पण्डित राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने ये शेर कहा- "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है?" यह सुनते ही अशफ़ाक़ उछल पड़े और बिस्मिल को गले लगा के बोले- "राम भाई! मान गये; आप तो उस्तादों के भी उस्ताद हैं।" इसके बाद तो अशफ़ाक़ और बिस्मिल में होड़-सी लग गयी एक से एक उम्दा शेर कहने की और अपने देश के लिए मर मिटने की। अगर ध्यान से देखा जाये तो दोनों में एक तरह की टेलीपैथी काम करती थी, तभी तो उनके जज्बातों में एकरूपता दिखायी देती है । अशफ़ाक़ बहुत दूरदर्शी थे उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल को यह सलाह दी कि क्रान्तिकारी गतिविधियाँ के साथ-साथ कांग्रेस पार्टी में भी अपनी पैठ बनाकर रखना हमारी कामयाबी में मददगार ही साबित होगा। बहरहाल अशफ़ाक़ व बिस्मिल के साथ शाहजहाँपुर के और भी कई नवयुवक कांग्रेस में शामिल हुए और पार्टी को कौमी ताकत प्रदान की । सन् 1921 के अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में राम प्रसाद बिस्मिल व प्रेमकृष्ण खन्ना के साथ अशफ़ाक़ भी शामिल हुए। अधिवेशन में उनकी मुलाकात मौलाना हसरत मोहानी से हुई जो कांग्रेस के व्ररिष्ठ शरमायेदारों में शुमार किये जाते थे। मौलाना हसरत मोहानी द्वारा प्रस्तुत पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव का जब गाँधी जी ने विरोध किया तो शाहजहाँपुर के कांग्रेसी स्वयंसेवकों ने गांधी की डटकर मुखालफत की और खूब हंगामा मचाया। आखिरकार गाँधीजी

को न चाहते हुए भी वह प्रस्ताव स्वीकार करना ही पड़ा । इसी प्रकार दिसम्बर 1922 के गया कांग्रेस अधिवेशन में भी बंगाल, बिहार व उत्तर प्रदेश के नवयुवकों द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस लेने पर गांधी का विरोध किया गया।

सन् 1922 के गया कांग्रेस अधिवेशन के बाद पार्टी में दो दल बन गये - एक धनाढ्य लोगों का और दूसरा आम तबके से आये हुए नवयुवकों का। पहले वाले दल ने 1 जनवरी 1923 को स्वराज पार्टी बना ली और दूसरे दल ने क्रान्तिकारी पार्टी के गठन का मन बना लिया। बंगाल के कुछ नवयुवक सीधे शाहजहाँपुर आकर मैनपुरी षड्यन्त्र के अनुभवी क्रान्तिकारी पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल से मिले और उनसे नयी पार्टी के गठन में सहयोग करने का आग्रह किया। बिस्मिल उन दिनों सिल्क की साडियों के व्यापार में उलझे हुए थे उनके पास समय नहीं था। इस पर अशफ़ाक़ ने उन्हें समझाया और अपनी ओर से पूरा सहयोग करने का वचन दिया। उसके बाद ही बिस्मिल ने अपने साझेदार बनारसी लाल को सारा कारोबार सौंप दिया और पूरे मन से अशफ़ाक़ और बिस्मिल क्रान्तिकारी पार्टी के काम में जुट गये। पार्टी की ओर से 1 जनवरी 1924 को अँग्रेजी में छापे गये घोषणा पत्र दि रिवोलूशनरी को पूरे उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले तक पहुँचाने में अशफ़ाक़ की सराहनीय भूमिका को देखते हुए हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य योगेश चन्द्र चटर्जी ने अशफ़ाक़ को बिस्मिल का सहकारी (लेफ्टिनेण्ट) मनोनीत किया और प्रदेश की जिम्मेवारी इन दोनों के कन्धों पर डाल कर बंगाल चले गये।

बंगाल में शचीन्द्रनाथ सान्याल व योगेश चन्द्र चटर्जी जैसे दो प्रमुख व्यक्तियों के गिरफ्तार हो जाने पर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन का पूरा दारोमदार बिस्मिल के कन्धों पर आ गया। इसमें शाहजहाँपुर से प्रेम कृष्ण खन्ना, ठाकुर रोशन सिंह के अतिरिक्त अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का योगदान सराहनीय रहा। जब आयरलैण्ड के क्रान्तिकारियों की तर्ज पर जबरन धन छीनने की योजना बनायी गयी तो अशफ़ाक़ ने अपने बड़े भाई रियासतुल्ला ख़ाँ की लाइसेंसी बन्दूक और दो पेटी कारतूस बिस्मिल को उपलब्ध कराये ताकि धनाढ्य लोगों के घरों में डकैतियाँ डालकर पार्टी के लिये पैसा इकट्ठा किया जा सके। किन्तु जब बिस्मिल ने सरकारी खजाना लूटने की योजना बनायी तो अशफ़ाक़ ने अकेले ही कार्यकारिणी मीटिंग में इसका खुलकर विरोध किया। उनका तर्क था कि अभी यह कदम उठाना खतरे से खाली न होगा; सरकार हमें नेस्तनाबूद कर देगी। इस पर जब सब लोगों ने अशफ़ाक़ के बजाय बिस्मिल पर खुल्लमखुल्ला यह फब्ती कसी- "पण्डित जी! देख लिया हमारी पार्टी में एक मुस्लिम को शामिल करने की जिद का असर अब आप ही भुगतिये, हम लोग तो चले।" इस पर अशफ़ाक़ ने यह कहा-"पण्डित जी हमारे लीडर हैं हम उनके बराबर नहीं हो सकते। उनका फैसला हमें मन्जूर है। हम आज कुछ नहीं कहेंगे लेकिन कल सारी दुनिया देखेगी कि एक पठान ने इस ऐक्शन को किस तरह अन्जाम दिया?" और वही हुआ, अगले दिन 9 अगस्त 1925 की शाम काकोरी स्टेशन से जैसे ही ट्रेन आगे बढी, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने चेन खींची, अशफ़ाक़ ने ड्राइवर की कनपटी पर माउजर रखकर उसे अपने कब्जे में

लिया और राम प्रसाद बिस्मिल ने गार्ड को जमीन पर औंधे मुँह लिटाते हुए खजाने का बक्सा नीचे गिरा दिया। लोहे की मजबूत तिजोरी जब किसी से न टूटी तो अशफ़ाक़ ने अपना माउजर मन्मथनाथ गुप्त को पकड़ाया और घन लेकर पूरी ताकत से तिजोरी पर पिल पड़े। अशफ़ाक़ के तिजोरी तोडते ही सभी ने उनकी फौलादी ताकत का नजारा देखा। वरना यदि तिजोरी कुछ देर और न टूटती और लखनऊ से पुलिस या आर्मी आ जाती तो मुकाबले में कई जाने जा सकती थीं; फिर उस काकोरी काण्ड को इतिहास में कोई दूसरा ही नाम दिया जाता। 26 सितम्बर 1925 की रात जब पूरे देश में एक साथ गिरफ्तारियाँ हुईं। अशफ़ाक़ पुलिस की आँखों में धूल झोंक कर फरार हो गये। पहले वे नेपाल गये। कुछ दिन वहाँ रहकर कानपुर आ गये और गणेशशंकर विद्यार्थी के प्रताप प्रेस में दो दिन रुके। वहाँ से बनारस होते हुए बिहार के एक जिले डाल्टनगंज में कुछ दिनों नौकरी की परन्तु पुलिस को इसकी भनक लगने से पहले उत्तर प्रदेश के शहर कानपुर वापस आ गये। विद्यार्थी जी ने उन्हें अपने पास से कुछ रुपये देकर भोपाल उनके बड़े भाई रियासतुल्ला ख़ाँ के पास भेज दिया। कुछ समय वहाँ रहकर अशफ़ाक़ राजस्थान गये और अपने भाई के मित्र अर्जुनलाल सेठी के घर ठहरे। आखिरकार एक रात वे वहाँ से भी रफूचक्कर हो गये और बिहार के उसी जिले डाल्टनगंज पहुँच कर अपनी पुरानी जगह नाम बदल कर नौकरी शुरू कर दी। एक दिन भेद खुल गया तो अशफ़ाक़ ट्रेन पकड कर दिल्ली चले गये और अपने जिले शाहजहाँपुर के ही मूल निवासी एक पुराने दोस्त के घर पर ठहरे। हालात से आजिज आकर अशफ़ाक़ ने पासपोर्ट बनवा कर किसी प्रकार दिल्ली से बाहर विदेश जाकर लाला हरदयाल से मिलने का मन्सूबा बनाया ही था कि किसी भेदिये की खबर पाकर दिल्ली खुफिया पुलिस के उपकप्तान इकरामुल हक ने उन्हें धर दबोचा। ऐसा कहा जाता है कि उस दोस्त ने ही अशफ़ाक़ को पकड़वाने में पुलिस की सहायता की थी।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि काकोरी काण्ड का फैसला 6 अप्रैल 1926 को सुना दिया गया था। अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ और शचीन्द्रनाथ बख्शी को पुलिस बहुत बाद में गिरफ्तार कर पायी थी। अत: स्पेशल सेशन जज जे०आर०डब्लू० बैनेट की अदालत में 7 दिसम्बर 1926 को एक पूरक मुकदमा दायर किया गया। मुकदमे के मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन ने अशफ़ाक़ को सलाह दी कि वे किसी मुस्लिम वकील को अपने केस के लिये नियुक्त करें। किन्तु अशफ़ाक़ ने जिद करके कृपाशंकर हजेला को अपना वकील चुना। इस पर एक दिन सी०आई०डी० के पुलिस कप्तान खानबहादुर तसद्दुक हुसैन ने जेल में जाकर अशफ़ाक़ से मिले और उन्हें फाँसी की सजा से बचने के लिये सरकारी गवाह बनने की सलाह दी। जब अशफ़ाक़ ने उनकी सलाह को तबज्जो नहीं दी तो उन्होंने एकान्त में जाकर अशफ़ाक़ को समझाया-"देखो अशफ़ाक़ भाई! तुम भी मुस्लिम हो और अल्लाह के फजल से मैं भी एक मुस्लिम हूँ। इस वास्ते तुम्हें आगाह कर रहा हूँ। ये राम प्रसाद बिस्मिल वगरह सारे लोग हिन्दू हैं। ये यहाँ हिन्दू सल्तनत कायम करना चाहते हैं। तुम कहाँ इन काफिरों के चक्कर में आकर अपनी जिन्दगी जाया करने की जिद पर तुले हुए हो। मैं तुम्हें आखिरी बार समझाता हूँ, मियाँ! मान जाओ; फायदे में रहोगे।" इतना सुनते ही अशफ़ाक़

की त्योरियाँ चढ़ गयीं और वे गुस्से में डाँटकर बोले-"खबरदार! जुबान सम्भाल कर बात कीजिये। पण्डित जी (राम प्रसाद बिस्मिल) को आपसे ज्यादा मैं जानता हूँ। उनका मकसद यह बिल्कुल नहीं है। और अगर हो भी तो हिन्दू राज्य तुम्हारे इस अंग्रेजी राज्य से बेहतर ही होगा। आपने उन्हें काफिर कहा इसके लिये मैं आपसे यही दरख्वास्त करूँगा कि मेहरबानी करके आप अभी इसी वक्त यहाँ से तशरीफ ले जायें वरना मेरे ऊपर दफा 302 (कत्ल) का एक केस और कायम हो जायेगा।" इतना सुनते ही बेचारे कप्तान साहब (तसद्दुक हुसैन) की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी और वे अपना सा मुँह लेकर वहाँ से चुपचाप खिसक लिये। बहरहाल 13 जुलाई 1927 को पूरक मुकदमे (सप्लीमेण्ट्री केस) का फैसला सुना दिया गया - दफा 120 (बी) व 121 (ए) के अन्तर्गत उम्र-कैद और 396 के अन्तर्गत सजा-ए-मौत अर्थात् फाँसी का दण्ड सुनाया गया। जज ने अपने फैसले में साफ-साफ लिखा था कि इन अभियुक्तों ने अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये यह षड्यन्त्र नहीं किया। मगर फिर भी अगर ये लोग अपने किये पर पश्चाताप प्रकट करें तो सजा कम की जा सकती है। वकील की सलाह पर लखनऊ जेल में जाकर अशफ़ाक़ बिस्मिल से मिले और उनका मत जानना चाहा। इस पर बिस्मिल ने उन्हें समझाया कि जिस प्रकार शतरंज के खेल में हारी हुई बाजी जीतने के लिये कभी-कभार अपने एक-दो मोहरे मरवाने ही पड़ते है, ठीक उसी प्रकार हम लोग भी माफीनामा दायर कर अपने को मौत की सजा से बचा सकें तो बेहतर रहेगा। सात साल में उम्र-कैद पूरी हो जाने के बाद हम इससे भी भयंकर काण्ड करके इस बेरहम सरकार की नाक में दम कर देंगे। पारस्परिक सहमति से उधर राम प्रसाद बिस्मिल ने और इधर अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ ने अपना-अपना माफीनामा दायर कर दिया। अशफ़ाक़ ने पहला माफीनामा 11 अगस्त 1926 व दूसरा माफीनामा 29 अगस्त 1927 को लिखकर भेजा। इसके अतिरिक्त वकील की सलाह पर एक और मर्सी-अपील अशफ़ाक़ की माँ मुसम्मात मजहरुन्निशाँ बेगम की तरफ से वायसराय तथा गवर्नर जनरल को भेजी गयी परन्तु उस पर कोई विचार ही नहीं हुआ। अशफ़ाक़ व उनकी माँ के बाद विधान सभा सदस्यों ने संयुक्त रूप से हस्ताक्षर करके संयुक्त प्रान्त के गवर्नर विलियम मोरिस को एक मेमोरेण्डम नैनीताल भेजा। उसके साथ ही पं० गोविन्द वल्लभ पन्त व सी०वाई० चिन्तामणि ने भी एक प्रार्थना पत्र भेजा किन्तु सब प्रयत्न बेकार ही रहे। 22 सितम्बर 1926 को होम सेक्रेटरी एच० डब्लू० हेग ने अपनी फाइनल रिपोर्ट दी जिसके अन्त में उसने स्पष्ट लिखा था- "इन लोगों का उद्देश्य एक स्थापित सरकार को उलटना था। यह चूँकि पूरी तरह सिद्ध हो चुका है, अत: इस मामले में फाँसी ही दी जा सकती है। जबकि बंगाल षड्यन्त्र में, जिसकी यह एक शाखा थी, अब तक ऐसी कोई तथ्यात्मक पुष्टि नहीं हुई है; अत: वहाँ के लोगों को फाँसी की सजा से मुक्त रखा गया है। मुझे पक्का विश्वास है कि यदि इन्हें फाँसी की सजा न देकर जिन्दा छोड़ दिया गया तो ये बंगाल तो क्या, पूरे हिन्दुस्तान में फैल जायेंगे। खान को 19 दिसम्बर 1927 को फ़ैज़ाबाद कारावास में फ़ाँसी की सजा दी गयी। उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व, प्रेम, स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ निश्चय और निष्ठा के कारण लोगों के लिए वो शहीद माने गये।

यह क्रांतिकारी व्यक्ति मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम, अपनी स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ता और निष्ठा के कारण अपने लोगों के बीच शहीद और एक किंवदंती बन गया।

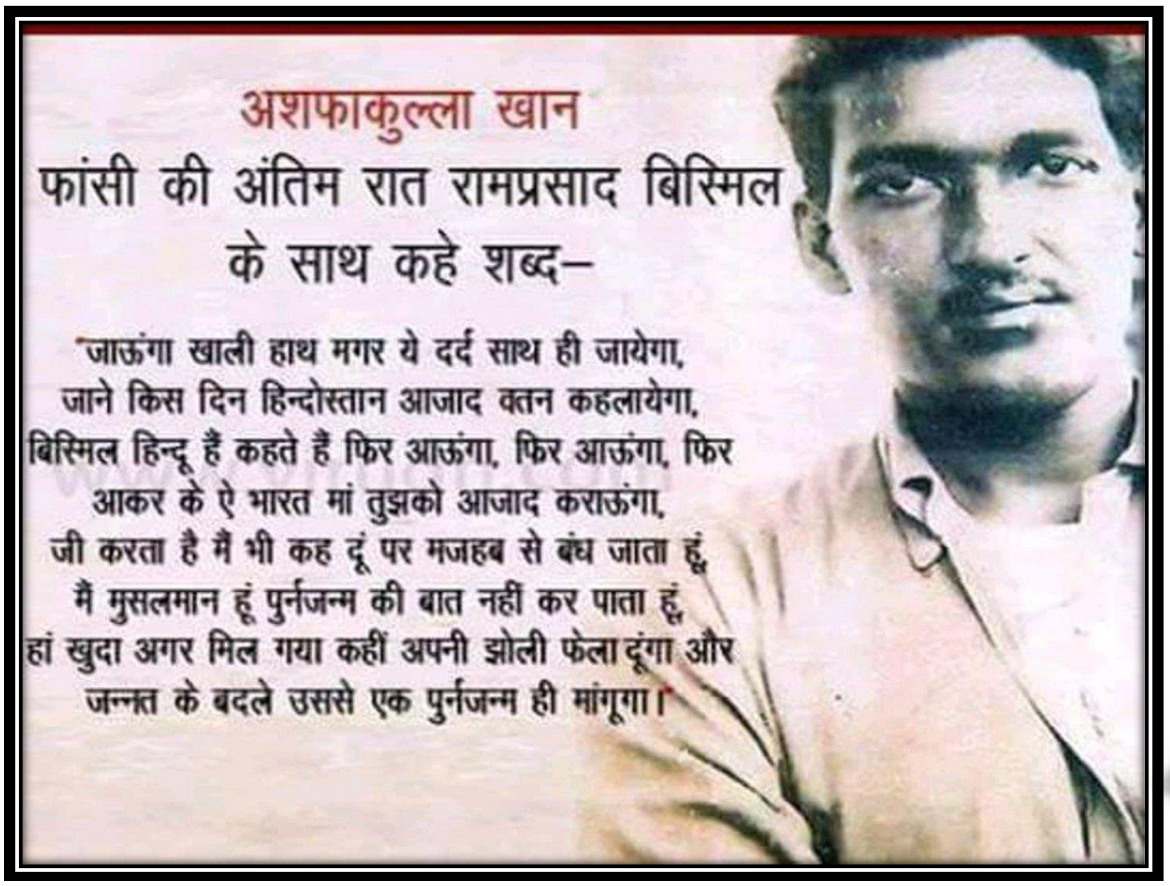

आधुनिक जीवन शैलीऔर नैतिक मूल्य श्रृंखला

श्री नित्यानन्द पाठक

नैतिक मूल्य जीवन का उत्कर्ष हैं। इनमें सूर्य-सा तेज है, चाँदनी-सी शीतलता। वायु-सा वेग है और जल-सी निर्मलता। किसी भी युग में जीवन मूल्य जिस ओर बढ़े, मानवता की यात्रा भी उस ओर मुड़ गई। ये मूल्य गति हैं, दिशा हैं और जीवन की पूर्णता का पर्याय हैं। मानवता की परिभाषा और पूर्णता.....कोई और नहीं, नैतिक मूल्य ही हैं। जीवन के प्रत्येक युग में मानव को अमित ज्ञान, अनगिनत अर्थ, बहुयोजक नैतिक निर्देश और महापुरुष सुलभ हुए हैं फिर भी मानवता जहाँ की तहाँ दृष्टिगत होती है। आखिर क्यों...? कारणों का सामान्य मूल्यांकन करें तो लगता है कि जीवन मूल्य संबंधी जो समस्याएं थीं, उनका निदान नहीं हुआ है और हमने केवल कुछ ही प्राकृतिक सोपानों को पार किया है। परंतु जीवन मूल्यों के इस आधुनिक जीवन शैली में प्रासंगिकता पर सूक्ष्म एवं गंभीर विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होता है कि मानव ने कदम दर कदम अपने को परिमार्जित किया है। अपनी नैतिक गुणवत्ता को परिष्कृत किया है। किसी न किसी काल में मानव के इस नैतिक विकास का बुनियादी रूपान्तरण भी हुआ है। धरती पर अस्तित्व में आए समस्त धर्मों का प्रचार इस रूपान्तरण का महान साक्ष्य है।

आज मानव-मूल्यों को जीवन-मार्ग में पल-प्रतिपल परिवर्तित होने की आवश्यकता है। समय-समय पर जागृति का एक नया लेख रचनें की नितान्त आवश्यकता है। प्रसिद्ध रूसी लेखक गैब्रियल गार्सिया मार्खेज़ कहते हैं- "मनुष्य सिर्फ उस रोज पैदा नहीं होता जिस दिन माँ उसे जन्म देती है। जीवन उसे बार-बार अवसर देता है कि वह जन्म ले।" प्रत्येक मनुष्य अपने प्रारब्ध का निर्धारण स्वयं ही करता है। जीवन एक ऊर्जा है जो कभी नष्ट नहीं होता बस अपना रूप परिवर्तित करता है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि हम जीवन की ऊर्जा को किस प्रकार और कहाँ परिवर्तित करते हैं यह हमारे ऊपर ही निर्भर करता है। आज जो भी इस संसार में घटित हो रहा है वह मनुष्य की अतिवादी उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण ही हो रहा है।

हमलोगों ने संसार को अपनी निजी संपत्ति समझ कर केवल उसका दोहन ही किया है। प्रकृति के जीवन-चक्र को भी हमने खण्डित करने में कोई कमी नहीं रखी है। हम ये भूल गए हैं कि मानव इस धरती पर अन्य प्राणियों की भांति एक प्राणी मात्र है तथा हमारी जाति से इतर अन्य सभी जाति के प्राणियों का भी इस धरती पर समान अधिकार है। इस सृष्टि के पालनहार ने बड़े ही जतन से इस धरती को बनाया और सबसे अधिक विवेक और ज्ञान से सुसज्जित करके मनुष्यों को इसका रखवाला नियुक्त किया, परंतु हम रक्षक ही भक्षक बन बैठे और अपने क्षणिक आनंद और स्वार्थ के लिए पीढियों की खुशियाँ और संपदाओं को लूटने में लग गए। आज स्थिति इतनी भयावह क्यों है? हमारे दुष्ट मस्तिष्क ने इसको भी तार्किक रूप से वैश्विक स्तर पर प्रकृति के किसी गुप्त चक्र का परिणाम सिद्ध करने का पूर्ण प्रयास किया, परंतु सत्य छिपता कहाँ है। हमारी लोलुपता ने ही आज संपूर्ण जगत के प्राणियों के अस्तित्व पर घनघोर संकट उत्पन्न कर दिया है। यदि इस लोलुपता का विश्लेषण किया जाए तो हम यह पाएंगे कि नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण ही यह संकट उत्पन्न हुआ है। मनुष्य में स्वार्थ की भावना के आधिक्य के कारण ही यह दुर्दशा हुई है। भारत की प्राचीन परंपरा का अनुसरण ही इस संकट को दूर करने का एकमात्र उपाय है। हमें अपनी प्रकृति की ओर लौटना होगा। हमें अपने मूल्यों का संरक्षण करना होगा। हमें "सर्वे भवन्तु सुखिनः" में सर्वे का अर्थ सभी प्राणियों से है यह बात पूर्णतः समझनी होगी। मनुष्य का धर्म है सभी प्राणियों सहित धरती के जीवन चक्र की रक्षा। अपने इसी धर्म से मनुष्य स्वयं की रक्षा कर सकता है क्योंकि 'धर्मो रक्षति रक्षितः'।

कार्य क्षमता बनाम कार्य इच्छा शक्ति

श्रीमती रितु मोटवानी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बात गौर करने वाली है कि क्या कार्य क्षमता से कार्य इच्छा शक्ति होती है कि कार्य इच्छा शक्ति से कार्य क्षमता बढ़ती है। विश्व के बड़े-बड़े दिग्गजों की यदि पार्श्व भूमिका देखें तो यह ज्ञात होता है कि कार्य करने करने के जुनून ने ही उनको सफलता के मुकाम पर पहुँचाया। यदि हम में कार्य करने का जुनून है या प्रबल इच्छा है तब ही हम सफलता के शिखर पर पहुँच सकते हैं। यदि यह ठान लिया जाए कि एक विशेष कार्य को करना ही है और एक मिसाल बनानी है तो हमें उस कार्य को पूर्ण सक्षम रूप में पूर्ण करने के लिए कोई रोक नहीं सकता । यदि जीवन में आप अपनी छाप छोड़ना चाहते हैं तो अपने काम में और जीवन में भी उच्च मूल्यों का समावेश करना जरूरी है। उचित कार्यशैली अपनाएं, बेहतर समय के लिए स्वयं को प्रतिस्थापित करें, समयोचित उपयोग और उद्देश्य- प्राप्ति सोच रखें, इच्छाओं की ऊँची उड़ान भरें, पर मदद के भरोसे न रहें, आप खुद अपनी मदद करें। समर्थ बनें, यदि असफल हों भी तो सामना करें, विकल्पों का पूरा उपयोग करें, अपने भाग्य के निर्माता स्वयं बनें। अपने आस-पास की प्रेरक शक्ति को पहचानें, आगे बढ़ें, नित्य नई उपलब्धियों की कामना करें, गुणों के आधार पर आगे बढ़ें, असफलताओं को भुलाकर आगे बढ़ें, परिवर्तन को स्वीकार करें, सही पहल करें, अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहें, दृढ़ता से डटे रहें, एकाग्रता ही सफलता का मूल मंत्र है।

अपनी संप्रेषण या संचार प्रणाली को सही रखने के लिए आवश्यक है कि लोगों में सूचना का आदान-प्रदान करते रहें। सफलता की आस कभी न छोड़ें। पूरे उत्साह से काम करने वाले ही बेहतरीन परिणाम प्राप्त करते हैं। भावार्थ यह है कि कार्य करने की प्रबल शक्ति ही हमें सक्षम बनाती है। अतः इच्छाशक्ति का पलड़ा कार्य क्षमता पर हमेशा भारी पड़ता है।

यदि मन में यह ठान लिया जाए कि एक विशिष्ट कार्य करना है और उसको साधते हुए हमें एक विशेष पदवी हासिल करनी है तो ब्रह्माण्ड की कोई शक्ति आपको रोक नहीं पाएगी और विश्व की सारी सकारात्मक ऊर्जा आपस में मिलकर एकनिष्ठ हो जाएगी और वह शक्तिपुंज नित्य नए रास्तों के द्वार आपके लिए खोल देगा जिसके माध्यम से आप अपने उद्यम को सही दिशा प्रदान कर सकेंगे और अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो सकेंगे। जब वास्तव में ऐसी स्थिति बनने लगती है तब आपके कार्य सिद्धि में आपके व्यक्तित्व का कोई भी पहलू जैसे आपकी उम्र, पदवी, शिक्षा, अर्हता इत्यादि किसी भी प्रकार की बाधा नहीं बनते क्योंकि वास्तव में आपकी योग्यता के आधार में आपकी

इच्छाशक्ति ही मायने रखती है। यही इच्छाशक्ति आपको फर्श से बुलंदियों पर बिठा देगी जहाँ से समाज को आपके व्यक्तित्व की और कोई भी कमी बौनी लगने लगेगी। विश्व ऐसे सहस्त्रों उदाहरणों का साक्षी रहा है जब सामाजिक रूप से योग्यता विहीन माने जाने वाले लोगों ने अपनी इच्छा शक्ति के बल पर अद्भुत और अविश्वसनीय कार्यों को सिद्ध कर दिखाया और समाज के लिए नज़ीर बन गए। इस विषय पर आप क्या सोंचते हैं इससे हमें अवश्य अवगत कराएं।

इच्छाशक्ति
कल्पवृक्ष के समान है
जो आपको हर वो चीज दे सकती है जिसकी
आप कल्पना कर सकते हैं।

कहानी चटपटे चिकन की

श्री जिज्ञासु पंत,
लेखापरीक्षक

धरती पर मनुष्य अगर भाग- दौड़ में लगा हुआ है तो वो सिर्फ दो वक्त की रोटी खाने के लिए और अगर कड़ी मेहनत के बाद रोटी के साथ चिकन खाने को मिल जाए तो मज़ा ही आ जाए।

आज मैं भी दिन भर की भाग-दौड़ के बाद शाम को विश्व प्रसिद्ध व्यंजन चिकन को उनके प्रिय मित्र मसालों से मिलाने जा रहा हूँ। ताजा-ताजा चिकन नहा-धो कर अपनी जगह पर बैठा हुआ अपने कुछ दोस्तों का इंतज़ार कर रहा है। सभी दोस्त भी चिकन से मिलने के लिए आतुर होकर एक जगह इकट्ठा हो गए हैं जिनमें प्याज (लंगोटिया मित्र), टमाटर (निकटवर्ती मित्र), लहसुन (अजीज़ मित्र), अदरक (परम मित्र) और कुछ जान छिड़कने वाले अनुयायी जैसे मिर्च, धनिया पत्ता, इलाइची, लौंग, जीरा, कड़ी पत्ता, दाल चीनी सभी शामिल हैं। अब इन सब में सबसे मसखरा मित्र तेल है और लोमड़ी से भी चतुर मित्र है प्रेशर कुकर।

तेल कुकर के साथ मिल कर सभी मसालों को चिकन से मिलवाने की तैयारी में जुट जाता है और कुकरअपने को गर्म करके सभी दोस्तों को एक-एक कर के बुलाने को कहता है। अब तेल गरम होकर सबसे पहले अपने फैंस को बुलाता है, खुशी-खुशी इलाइची, कड़ीपत्ता और जीरा तेल से मिलते हैं। फिर प्याज धीरे से एंटर होता है। इन सबसे मिलने-मिलाने आती है एक करछी और मसालों को हिलाने-मिलाने लगती है। अब अपना रंग दिखाने आता है टमाटर और सबके रंग में ढलने लगता है, दोस्तों की महफिल जमने लगती है और थोड़ी गरमा-गरमी भी शुरु हो जाती है जिसे ठंडा करने आते हैं मसालों से मिला हुआ पानी (हल्दी, नमक, धनिया पाउडर, लाल मिर्च, चिकन मसाला, लहसुन, अदरक, पेस्ट व कश्मीरी मिर्च पाउडर)। सब कुछ पहले जैसा शांत कर देता है और माहौल को थोड़ा और सुंदर व स्वादिष्ट बना देता है। अब सबको जिससे मिलने का बेसब्री से इंतजार था वही चिकन धीरे-धीरे कुकर में प्रवेश करता हौ और थोड़ा रिलैक्स होकर मसालों के रंग में घुलने लगता है, चतुर कुकर सही मौका देख कर सबको कैद कर लेता है और धीमी आँच पर गरम करता है। कुछ देर बाद जब गरमी असहनीय हो जाती है तब अंदर फंसे हुए चिकन और उसके मित्र सभी मसाले आपस में मिल कर मदद के लिए कुकर की सीटी से आवाज लगाते हैं। तीसरी बार सीटी की आवाज कलयुग के मनुष्य जाति के प्राणी को सुनाई देती है, तो वह तुरंत मदद के लिए जाता है और कुकर को आग से बचा कर अपने पास

रख लेता है। कुछ देर बाद जब वह आदमी 'जिज्ञासु' होकर कुकर खोलता है तब उसे स्वादिष्ट लजीज़ चिकन खाने को मिल जाता है। धीरज के साथ किया गया कार्य सफल होता है और पकाया गया कोई भी व्यंजन स्वादिष्ट होता है। इस व्यंजन की कहानी केवल मनोरंजन के लिए लिखी गई है इसमें लेखक द्वारा किसी भी जीव को नुकसान पहुँचाए जाने या आहत करने की कोई मंशा नहीं है।

शब्द भी एक तरह का भोजन हैं। जिसे सही समय सही शब्द परोसने की कला आ जाए तो दुनिया में उससे बढ़िया रसोईया कोई नहीं है।

दुनियादारी बनाम शिक्षा

श्री अमित कुमार सिन्हा,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

गांव के स्कूल में एक मास्टर साहेब थे...नाम था तिरलोचन तिवारी उर्फ़ मरखहवा मास्टर..ज्ञान को हमेशा कपार पर उठाये रहते थे। माघ के जाड़े में भी उनको देखने पर जेठ का एहसास होता था.. उनके इस मिजाज का आलम ये था कि स्कूल का कोई लड़का नहीं बचा था जिसके पीठ पर मास्टर साब की छड़ी का निशान न हो..रनुआ और सनुआ तो उनके नाम से माँड़ो के बांस जैसा हिलने लगते थे....गिनती नहीं कि दीपुआ आ सीपुआ ने कितनी बार मास्टर साहब को देखकर पैंट में पेशाब किया होगा...रामबचन का मझिला लड़का तो एक दिन तेरह साते अंठानबे कह दिया..बाप रे ! मास्टर साहेब अईसा पिनीक के मारे कि हल्दी दूध का घोल लेना पड़ा तब जाकर लौंडे के जान में जान आई। आज भले उसे नौ का पहाड़ा याद नहीं लेकिन मरखहवा मास्टर साहेब का नाम सुनते ही तेरह का पहाड़ा तेरह बार पढ़ देता है।

तो साहेब.. हुआ क्या कि मास्टर साहब का एक ही बेटा था पिंटूआ। गाँव भर में शोर था की पिंटूआ से पढ़ने में तेज तो पूरे जिले-जवार में कोई नहीं है। बाइस घण्टा हनहना के पढ़ता है..फिजिक्सवा आ केमेस्ट्रीया को तो मूड़ी तर लेकर सूतता है..मैथमैटीक्सवा त शरबत जइसा घोर के पी गया है। सब परीक्षा में फर्स्ट कलास आता है। उसको कलेक्टर बनने से काली माई भी नहीं रोक सकतीं। लाल बत्ती हनहनाता हुआ जहिया गांव में आया..बुझ लीजिये कि ओहि दिन में गाँव में गरदा हो जाएगा"। इतना कहने के बाद सभी लोग एक स्वर में कहते "हाँ तो मने बेटा हो तो पिंटूआ जइसा..किस्मत हो तो तिरलोचन मास्टर जइसा।"

इस उम्मीद और तारीफ़ के कारण मास्टर साहेब भी पिंटूआ को खूब पढ़ाए। बारहवीं तक कहीं घर से आने-जाने नहीं दिए। बस स्कूल से किताब, किताब से कोचिंग, कोचिंग से ट्यूशन, ट्यूशन से घर, घर से स्कूल। बारहवीं तक पिंटूआ इसी माहौल में बिल्कुल एक यंत्र की भांति पढ़ा। एक दिन हुआ ऐसा कि परम्परा के अनुसार बीटेक में एडमिशन हो गया। बीटेक में एडमिशन हुआ तो परम्परा के अनुसार नौकरी भी मिल गई। फिर एक साल नौकरी किया तो परम्परा के अनुसार किसी दूसरे जगह से आकर्षक सैलरी का ऑफर भी आ गया। वहां से नौकरी छोड़ा तो मास्टर साहेब के दबाब में डिप्लोमा इन फलाना, डिप्लोमा इन ढिकाना सब कर लिया। फिर खूब बढ़िया तनख्वाहवाली नौकरी भी मिल गयी। कुछ दिन बाद बियाह हुआ तो बढ़िया नौकरी करने वाली मेहरारू भी मिल गयी। लेकिन साहेब..आजकल तिरलोचन मास्टर साहेब बड़े खिन्न रहते

हैं। पिंटूआ का बड़का बेटा उनको गरियाता है..पिंटूआ की मेहरारू रोज उनके मरने की कामना करते हुए अपने किस्मत को कोसती है.मास्टर साहेब से एक छन नहीं पटता है..फलस्वरूप पिंटूआ ने अपने आप को अपने माई-बाबूजी से दूर कर लिया है। अब तो सालों हो गए, गाँव भी नही आता। फिर क्या..जिस मास्टर साहेब की कभी तूती बोलती थी वो आजकल अपने दुआर पर दीन-हीन की तरह मुंह लटकाए बैठे रहतें हैं। जिस पिंटूआ को लेकर कभी गर्व महसूस करते थे, उसको लेकर अब शर्मिंदा रहते हैं।

लेकिन ये सिर्फ तिरलोचन मास्टर साब की कहानी नही है..जरा नज़र दौड़ाइये तिरलोचन मास्टर साहब जैसे दो-चार दस लोग आपको हर गाँव,हर टोले-मोहल्ले में मिल जाएंगे। आज हर शहर में धड़ल्ले से एक बिल्डिंग बन रही..जिसकी नींव में सीमेंट बालू नहीं, तिरलोचन मास्टर साहेब वाली कहानियों को डाला जा रहा है और दुनिया बड़े ही संस्कारपूर्वक उसे वृद्धाश्रम कह रही है। लेकिन क्या कहेंगे, दोष तो पूरा तिरलोचन मास्टर साहेब का है न ?..क्या कहतें हैं आप..? बिल्कुल आप सही कहतें हैं...जीवन भर तो बेटे को किताबों में उलझाये रहे..डिप्लोमा पर डिप्लोमा, डिग्री पर डिग्री, नौकरी पर नौकरी कराते रहे। कराते-कराते एक दिन उसे पईसा कमाने वाली मशीन बना दिए..बस आदमी बनाना भूल गए और ये भी भूल गए कि हमारे पुरखे-पुरनियों ने एक कहावत कहा है कि "बबुआ रे एक मन विद्या के नौ मन बुद्धि चाहेला.." वो भूल गए कि बेटा-बेटी को सभी डिप्लोमा के बाद एक वो डिप्लोमा कराना सबसे ज्यादा जरूरी है.. जिस डिप्लोमा को किए बिना कुछ भी करना बेकार है। वो डिप्लोमा है दुनियादारी का डिप्लोमा, वो डिप्लोमा है विवेक का डिप्लोमा, संस्कार का डिप्लोमा, सदाचार का डिप्लोमा, संवेदना का डिप्लोमा। वो भूल गए कि पिंटूआ ये नहीं करेगा तो एक दिन बड़ी दिक्कत होगी..लेकिन अफ़सोस....न इसमें मास्टर साहेब का दोष है और न पिंटूआ का, ये तो उस लॉर्ड मैकॉले वाली शिक्षा पद्धति का दोष है जिसमें इस टाइप के डिप्लोमा की कोई व्यवस्था नहीं की गई है, न ही अपने आस-पास घट रही घटनाओं को देखकर कुछ सीखने की जरूरत महसूस की गई है। बस किताब से रटकर फर्स्ट क्लास पास होना और नौकरी करना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य रह गया है। आज मास्टर साब जैसे बाप धड़ल्ले से अपनी अपनी संतानों को पैसा कमाने वाली मशीन बना रहे हैं। आप जरा नज़र दौड़ाइए .... जितनी तेजी से देश में ये मशीने बन रही हैं उतनी ही तेजी से वृद्धाश्रम बन रहे हैं। क्या है कि मास्टर साहेब हों या पिंटूआ सबको सीखने की जरूरत है । गुजरात के उस अरबपति हीरा व्यापारी से...जिसने एक दिन अमेरिका में एमबीए करने वाले अपने बाइस वर्षीय बेटे से सभी सुविधाएं छीनकर ये कह दिया कि "पढ़ाई लिखाई को थोड़ा रोको और जाओ..बिना पैसे खर्च किये कुछ कमाकर लाओ.." कहते हैं उस लड़के के पिता का सैकड़ों देशों में कारोबार फैला हुआ है। अरे वही बाप..साव जी ढोलकिया जिनका नाम दीपावली आते ही इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में दिए की भाँति चमकने लगता है, जो अपने कम्पनी के कर्मचारियों से इतना प्रेम करतें है कि हर दिवाली में हजारों कारों से लेकर हजारों फ्लैट भेंट कर देते हैं। एक दिन उसी अमीर बाप ने अपने बेटे को 7 हजार रुपए दिए और सामने तीन शर्त रख

दी... पहली शर्त ये थी कि वह किसी गैर भाषी प्रांत में रहेगा। बिल्कुल अनजान लोग, भाषा और माहौल के बीच...और वहाँ भी कहीं एक हफ्ते से ज्यादा काम नहीं करेगा, दूसरी यह कि वह कहीं पर भी अपने पिता के नाम का इस्तेमाल नहीं करेगा..तीसरा यह कि वह ना तो मोबाइल इस्तेमाल करेगा और ना ही दिए गए 7 हजार रुपए। लोग कहते हैं..इस घटना के बाद उस लड़के ने एक साक्षात्कार में कुछ बड़ी ही गौर करने लायक बातें कही जो मास्टर साहेब और पिंटूआ टाइप दोनों लोगो को जानना चाहिए...उसने कहा कि "मैं एक महीने तक कोच्चि में काम करने के बाद वापस आ गया। पाँच दिनों तक मुझे ना तो काम मिला ना ही रहने के लिए कोई जगह। लगभग 60 जगहों पर आवेदन करने के बावजूद मुझे किसी ने काम नहीं दिया। फिर बड़ी मुश्किल से बेकरी में काम किया फिर एक कॉल सेंटर में। फिर वहीं एक जूते की दुकान पर..और आखिर में मैकडोनाल्ड पहुँचा। इस तरह संघर्ष करके बस चार हजार रुपये कमाए। इस घटना के बाद मेरे अंदर वो ताकत मिली जो आजतक किसी किताब ने नहीं सिखाई थी। वो थी रिजेक्शन को झेलने की ताकत। बार-बार असफल होने की ताकत, किताब से हटकर दुनिया और लोगों को नजदीक से समझने की ताकत, बार-बार गिरकर उठने की ताकत, बिना किसी के सहारे खड़े होने की ताकत.."तिरलोचन मास्टर साहेब के बेटे पिंटूआ को उस सुंदर पिचाई से सीखना चाहिए..वही गूगलके सीईओ सुंदर पिचाई। अभी वो आई.आई.टी.खड़गपुर आए थे और एक सवाल के जबाब में कह गए कि "दुनियादारी का ज्ञान किताबों के ज्ञान से ज्यादा जरूरी है। किताब और फर्स्ट डिविजन हमें जीवन भर जानकारी और पैसा तो दे सकते हैं लेकिन इस जानकारी और पैसे का सदुपयोग करने के लिए विवेक नहीं। सफलता हमेशा मार्कशीट देखकर नहीं आती, स्मार्ट तरीके से मेहनत करने से आती है - गधे जैसे मेहनत करने से नहीं।" सुंदर ने आगे कहा कि "उनको तो यह सुनकर आश्चर्य होता है कि भारत में आठवीं कक्षा का बच्चा आज आईआईटी की तैयारी कर रहा है। बस सुंदर ने अभी कुछ देखा ही नहीं। वो मेरे मोहल्ले के एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में आए होते तो दांतों तले ऊँगली दबा लेते। दो-दो, तीन-तीन साल के बच्चे चिल्ला रहे हैं, लेकिन उनकी क्यूट सी मम्मा अपने क्यूट से मुन्नू के पीठ पर बस्ते को लादे जा रही हैं..बच्चा चिल्ला रहा है, रो रहा है, छटपटा रहा है और वो पास खड़ी मोना आँटी से मुंह चमकाते हुए कहे जा रही हैं "मेला लाजा बेटा तो इंजीनियर बनेगा.."अरे ! बस करिए महराज। क्या ख़ाक बनेगा। आपका यही हाल रहा तो भगवान न करे.. आपका हाल भी तिरलोचन मास्टर का हाल हो जाएगा। अरे! अभी कितना छोटा है, कितना मासूम...आपकी गोद से बढ़कर कोई स्कूल हो सकता है क्या उसके लिए....? अपने पास ही जमकर खेलने दीजिए न, गिरने दिजिए, उठने दीजिए, बनाने और बिगाड़ने दिजिए. फेंकने और पटकने दीजिए। उसके हाथ से गिलास न लीजिए। उसे मिट्टी दीजिए और कहिए की एक मिट्टी का सुंदर सा गिलास बनाकर लाओ। बस..आदमी बनने की पहली क्लास उसी दिन शुरु हो जायेगी। एक संवेदनशील आदमी क्योंकि ये संवेदनशीलता तभी आएगी..जब कुछ सृजनशीलता आएगी..जब सृजन आएगा तब विवेक आएगा। जब विवेक आएगा तभी ज्ञान की सार्थकता होगी। इन इंग्लिश मीडियम स्कूलों के

चक्कर में ज्यादा मत पड़िए। दरअसल ये बाजारवाद का चमत्कार है..जिसके भयंकर मकड़ जाल में आप फंस गए हैं। आप ध्यान से देखेंगे तो वहाँ बड़ी ही गहराई में एक साजिश चल रही है..आपके बच्चे को आपकी भाषा, संस्कृति, संस्कार और संवेदना से दूर करने की..साजिश। आप जानिए कि वहां आज रट्टू तोते बनाए जा रहे हैं..और ये भी जानिए की रट्टू तोते कभी सृजन नहीं करते। इतिहास गवाह है..जरा उठाकर देखिएगा...कितनों के नाम गिनाऊँ..अधिकतर महान लोग जिन्होंने अपने सृजन से दुनिया को बदल कर रख दिया है वो या तो कॉलेज नहीं गए या कॉलेज के सबसे गधे छात्र रहे हैं...या बीच में ही कॉलेज छोड़ दिया है.....जरा आँखें खोलिए और इन किताबों का बोझ कम करिए। वरना क्या पता ईश्वर न करें कि आपको तिरलोचन मास्टर साहेब की तरह उदास रहना पड़े..ईश्वर न करे की किसी दिन पैसे की मशीन बन गया आपका बेटा आपके शहर का वृद्धाश्रम आपके लिए बुक कर आए।

जय राम सिंह
क. अनुवादक

आओ हिन्दी को अपनाएँ

आओ हिन्दी को अपनाएँ
हिन्दी का इक दिया जलाएँ।

हँसना रोना जब हिन्दी में
अभिनय गायन जब हिन्दी में
प्रणय परीक्षा जब हिन्दी में
मान मनौव्वल जब हिन्दी में
तब हिन्दी से क्यों कतराएँ?
आओ हिन्दी को अपनाएँ
हिन्दी का इक दिया जलाएँ।

हिन्दी में ही आसन भाषण
हिन्दी देती है सिंहासन
हिन्दी राष्ट्रकंठ कहता मन
हिन्दी समझे झूमे जन-गण
हिन्दी में ही कार्यनिष्पादन
करने में हम क्यों शरमाएँ?
आओ हिन्दी को अपनाएँ
हिन्दी का इक दिया जलाएँ।

अभिव्यक्ति में हिन्दी होगी
पूर्ण सुशोभित हिन्दी होगी
तभी पूर्ण आजादी होगी
जगती भी आलोकित होगी
इतनी सरल कि कोई पढ़ ले-
लिख ले, हिन्दी पर इतराएँ
आओ हिन्दी को अपनाएँ
हिन्दी का इक दिया जलाएँ।

कन्फर्म टिकट

श्री अमित कुमार सिन्हा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी के सफर की करूँ बात तो,
वापसी का टिकट मेरा कन्फर्म है।
इसलिए मन भरकर क्यों ना जीयें
मन में भरकर भला क्यों हम जीयें।

छोड़िए शिकायतें गिले और शिकवे,
हरेक काम पर अदा शुक्रिया कीजिए।
छोटे ख़्वाबों का अपनी औकात में
जितने हैं पैसे उसी में मज़ा लीजिए।

मन में हो जो भी बस अब उसी काम से
मीठी सी एक हलचल मचा दीजिए।
उम्र का हर एक दौर मजेदार है
बस आप उम्र का मज़ा लीजिए।

ना दुःख दीजिए ना गिला कीजिए,
गर है कोई बात तो सुलह कीजिए
जिंदगी जिंदादिली से जियो, क्योंकि
वापसी का टिकट तो सबका कन्फर्म है।

श्री अभिनन्दन अग्रवाल,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

किसान

खून पसीना एक हुआ जो तब आई है देश की लाली
जो देता हमको खुशहाली, जिसके आँगन से हरियाली,
लगा रहा जो हर हालत में देने को भोजन की थाली
पेट भरे जो आबादी का उसकी आँते तब भी खाली
देखो आज कैसी हालत है, धरती के भगवान की।
टूटी माला जैसे बिखरी है, किस्मत आज किसान की।

सब सह-सह कर फिर दोबारा फसलें वो उपजाता है
मौसम के बिगड़े तेवर का सारा बोझ उठाता है
टूटे फिर हिम्मत जब उसकी कर्ज न खाने जाता है
अपनी ऊसर सी काया को फाँसी पर लटकाता है।
किससे पूछें? कौन चुकाए कीमत उसके जान की
टूटी माला जैसे बिखरी है किस्मत आज किसान की।

सपने टूटे अपने छूटे क्या कीमत रह गई ईमान की
देश में कोई मोल नहीं है उसके किसी एहसान की
बदहाली में भी वो हस-हस कर सारे धर्म निभाता है
एक बेटी की शादी करके जीवन भर कर्ज चुकाता है।
उसके मन में क्या कीमत है बेटी के मुस्कान की
टूटी माला जैसे बिखरी है किस्मत आज किसान की।

किसी को चिंता है कुर्सी की, किसी को है मतदान की
कौन है वो जो पहले चिंता करता है हिंदुस्तान की।
धर्म धरा पर करता है, सुख-दुःख में संबंध निभाता है,
अपनी मर्यादा की रक्षा में, प्राणों की बली चढ़ाता है।
देखो हमने क्या हालत कर दी, धरतीपुत्र महान की।
टूटी माला जैसे बिखरी है, किस्मत आज किसान की।

परिश्रम की मिसाल हैं,
जिस पर कर्जों के निशान हैं।
घर चलाने में खुद को मिटा दिया
और कोई नहीं वह किसान हैं।

जीवन-दर्पण

श्री अभिनन्दन अग्रवाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

- जीवन एक चुनौती है - सामना कीजिए।
- जीवन एक दुःख है - स्वीकार कीजिए।
- जीवन एक रहस्य है - सुलझाइए।
- जीवन एक साहसिक कार्य है - हिम्मत रखिए।
- जीवन एक घटना है - सामना कीजिए।
- जीवन एक कर्तव्य है - पूरा कीजिए।
- जीवन एक खेल है - आराम से खेलिए।
- जीवन एक संगीत है - ध्यान से सुनिए।
- जीवन एक चरम सुख है - स्वाद लीजिए।
- जीवन एक सुअवसर है - सदुपयोग कीजिए।
- जीवन एक सपना है - महसूस कीजिए।
- जीवन एक सफर है - पूरा कीजिए।
- जीवन एक प्रतिज्ञा है - निभाइए।
- जीवन एक सौंदर्य है - पूजा कीजिए।

जिंदगी

श्री अभिनन्दन अग्रवाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी को जी भरके जीने के लिए विश्वास जरूरी है,
जहर को अमृत बनाने के लिए एक अभ्यास जरूरी है।
उतार-चढ़ाव को देख कर क्यों घबराता है साथी,
शिखर-सी बुलंदी को पाने के लिए प्रयास जरूरी है।

जिंदगी ये किसी के लिए स्वर्णिम प्रभात है,
तो कहीं किसी घर में अमवस्या की रात है।
किसी के लिए ये दुःख और दर्द की है दास्तां,
तो किसी के लिए खुशियों की बारात है।

जिंदगी हार-जीत में यूँ ही बीत जाती है,
जिंदगी प्रेम के बिन यूँ ही रीत जाती है।
जिंदगी को प्रेम करने के लिए विश्वास जरूरी है,
जहर को अमृत बनाने के लिए प्रयास जरूरी है।

जिंदगी में अगर कुछ पाना है
तो तरीके बदलो इरादे नहीं
जिंदगी को अगर समझना है तो पीछे देखो
और अगर जीना है तो आगे देखो

जल ही जीवन है

सुश्री वी. सरला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं सुनाती हूँ सबको महत्व जल का जीवन को
सुनाकर एक लोकप्रिय गीत के अन्तरे के बोल को
जल जो न होता तो यह जग जानता कैसे जल को
जिसमें है छुपी सृष्टि की सच्चाई लेकर के जल को

थे हमारे युग पुरुष बड़े ज्ञानी लेकर के जल को
थी उनको ज्ञान महत्व जल के लेकर जीवन को
थे पूजते मानकर साक्षात देवी मैया का रूप लेकर के नदियों के जल को
दिया बड़ा मान पूजा ब्याह में लेकर के जल को
थे कहते पाणिग्रहण कन्यादान को मानकर के महत्व जल को

है बड़ी विडम्बना नहीं रखा सँजो के हमारे नदियों और झरने के जल को
रुख मोड़ा मानव ने नदियों और झरने के जल से बुझाने अपनी तृष्णा
तड़पती धरती जलकर भीषण आग में लेकर के मानव के तृष्णा को
देख इस दृष्टि को हुआ सृष्टि का प्रकृति लाल लेकर के जल को
और लिया मुख मोड़ अंबर को लेकर के जल को

छीना उसने मानव के जीवन से जल को
किया नष्ट खेती करके अभाव जल को
कभी उजाड़ी लहराती फसल भर भर के जल को
हैं अब समझने लगे इस युग के मानव महत्व जीवन में जल को
और उस गीत के अंतरे में छुपा सृष्टि के सच्चाई को
जल जो न होता तो यह जग जाता जल को
है अब करता रोज नई खोज सीचने जीवन में जल को।

जिसे अब तक न समझे वो कहानी हूँ मैं,
मुझे बर्बाद न करो पानी हूँ मैं।

वक्त

श्रीमती रितु मोटवानी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वक्त को जिसने नहीं समझा,
उसे मिटना पड़ा है।
बच गया तलवार से तो,
फूल से कटना पड़ा है।

क्यों न कितनी ही बड़ी हो,
क्यों न कितनी ही कठिन,
हर नदी की राह से,
चट्टान को हटना पड़ा है।

तुम जो बादलों के भाल पर
आरूढ़ हो इतरा रहे हो,
बिजलियों की मार से,
बादलों को भी फटना पड़ा है।

इंसान हो झुककर रहो तुम,
प्रेम के पथ पर बढ़ो तुम।
प्रेमियों के प्रेम में ही,
केशव को रास करना पड़ा है।

दंभ भरना जितना कठिन है,
प्रेम उतना ही सरल।
शबरी के उसी सरल प्रेम में,
हरि को जूठन भी चखना पड़ा है।

श्री अंकित शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सूरत भगवान की

कहने को भगवान की बहुत सी मूरत है,
पर जिस मूरत की घर में जरूरत है,
वो तो मम्मी और पापा की भोली सी सूरत है।

जिन्होंने कभी महसूस न होने दी कोई जरूरत,
वही तो है मम्मी पापा की भोली सी सूरत।
पता है मुझे नहीं होते थे पैसे हर बार,
पर हमारी छोटी ख्वाइश की खातिर
न जाने कैसे लाते थे खुशियाँ उधार,
चाहूँ मैं गर तो सपने में भी न लौटा सकूँगा,
किया इतना प्यार, हाँ जो प्यार बेशुमार।

जिसने सहारा दिया हमको हर एक समय पर,
थाम कर उंगलियाँ जो चल पड़े हम डगर पर।
डिगे ना कभी, उनके संस्कारों की बदौलत,
झुकें ना कभी, सच्चाई है अपनी दौलत,
हाँ गिले होंगे पर कोई दोहमत न होगी
आपकी औलाद को दुनिया लायक कहेगी।

चाहता हूँ कहूँ और भी कुछ बहुत मैं,
पर आँखे नम हो रही हैं, गला रुंध रहा है,
कि नज़रों के आगे वही भाव हैं फिर,
इस संसार के देवताओं की मूरत
आपकी भोली सूरत है जिसकी ज़रूरत।

नज़र

श्रीमती रूपराशि
महानिदेशक (तत्कालीन)

पास जाकर देखो तो बस पत्थरों का
ख़जाना लगता है।

खोजो तो शायद इक पन्ना कहीं मिल जाए
चाहे धूल से धूसरित हो ये बरसों
पुराना लगता है।

क्यूँ डरती है जिंदगी उलझनों से उलझने में
हर पल
क्यूँ बूँद को मोती बनने में ज़माना लगता है?

ऐ दोस्त!
किसी पत्थर को उठा ज़रा ग़ौर से देख
किसी शिल्पी दिल का आसमाँ सा लगता है!

Language appreciation takes time. Poetry takes a little longer time.
Hence, I translate for my colleagues from non-Hindi backgrounds.

Views

From the distance moon looks enchanting
If you go near you find it merely a treasure of stones

May be if one searches a bit,
one may get an emerald:
which looks ancient being dust laden

Yet
why life is apprehensive to engage in
issues
wonder why rain drop takes ages to
turn into a pearl

My friend
Pick up a stone from the surface
of moon
If it is in hand of a sculptor,
his heart would be visible in it

(As a sculptor's world is in the same stone which is non-descript for others!)

दिनांकः 25.09.2019

जय राम सिंह
क. अनुवादक

जय हो हिन्दुस्तान की

इस मिट्टी को नमन करो यह मिट्टी है भगवान की।
भारतवर्ष महान की जय, जय हो हिन्दुस्तान की।।

ऋषियों मुनियों तपस्वियों से सिंचित है यह धरती
अपने उपवन के फूलों में रंग सुगन्ध है भरती
इस मिट्टी में भरी कथाएँ त्याग धर्म बलिदान की।

धूल धूसरित राम कृष्ण जैसे ईश्वर हैं खेले
इस मिट्टी में प्रेम भाव के लगते हरदम मेले
इस मिट्टी में वेदों की उत्पत्ति हुई पुराण की।

हर नर के आदर्श राम और नारी की है सीता
यहीं तो अमृत देकर ईश्वर स्वयं हलाहल पीता
यहीं राधिका ने समझाई प्रेम के महिमागान की।

यहाँ की नदियाँ झील सरोवर सब पूजित हैं होते
कंकड़- कंकड़ शंकर दिनकर स्वर्णिम किरणें बोते
इक इक डुबकी मोक्ष दिलाती है गंगास्नान की।

खड़ा हिमालय पहरा देता सागर पाँव है धोता
भारत में जो आता भारत का ही बनकर होता
पुण्य पराक्रम की पूँजी है भारत भूमि महान की।

राज्य बड़ा है शासक से इस मिट्टी ने बतलाया
रामराज्य ने समृद्धि अर्जित करना सिखलाया
यहीं कथाएँ मिलती हैं परहितार्थ अस्थिदान की।

इस मिट्टी को नमन करो यह मिट्टी है भगवान की।
भारतवर्ष महान की जय, जय हो हिन्दुस्तान की।।

लक्ष्य की प्यास

एस सुरेश
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

रेगिस्तान की एक खतरनाक यात्रा में,
पानी की खोज पर हमेशा भाग्य पर निर्भर!

थकान में मिला एक उपहार मरुस्थल के रूप में,
मेरी आगे की यात्रा का अंधेरा हटा!

मेरी लंबी प्यास बुझाने के बाद भी,
जैसे ओझल हुआ मृगतृष्णा की तरह, मरुस्थल मेरी आँखो से!

लेकिन मैं अभी भी आश्वस्त हूँ कि,
मृगतृष्णा मुझे आगे ले जाएगी
मेरे लक्ष्य की ओर!

लक्ष्य है सामने किस बात का है इंतजार अब
कर दे सही वार पता नहीं मौका मिलेगा कब

कराह और करवट-जनशक्ति की

(15 वर्ष के कवि हृदय से उद्धृत - इमर्जेन्सी के परिवेश में)

रेलगाड़ी तेज़ी से दौड़ी जा रही थी।
मेरे विचारों की श्रृखला में
नई कड़ियाँ जुड़ती जा रहीं थीं-
यही है मेरा भारत देश;
ये पर्वत, ये घाटियाँ, ये नदियाँ,
ये मैदान और खेत-खलिहान
वेद-पुराणों ने इसके गुण गाए हैं
कवि इसकी स्तुति व रूप-वर्णन करते
आज तक नहीं अघाये हैं।

मेरे देश की जनता निर्धन ही सही,
शैक्षिक रूप से उसमें पिछड़ापन ही सही,
पर अपनी संस्कृति, अपने हितों के प्रति
यह पूरी तरह से है जागरूक।
दुनिया की कोई भी शक्ति उसे
आज तक कर नहीं सकी है मूक।
फिर आज बिन सर्दी यह पाला क्यूँ?
लोगों की जुबान पर ताला क्यूँ?
कवि, जो प्रकृति सौन्दर्य निहारा करते थे
अब बीस सूत्री कार्यक्रम पर लिखा करते हैं
झूठी प्रशंसा के मोह में
अपने आप से धोखा करते हैं।
क्या यही है मेरा देश

जिसके बारे में मैं सोचा करता था?
नहीं, शायद मैं केवल
कल्पना में उड़ानें भरता था।

यह नहीं है वो भारत
जिसको किसी का डर नहीं।
यह नहीं है वो भारत
जहाँ या तो आज़ादी या सर नहीं।।
हे ईश्वर ! यह सपना हो
मैं नहीं चाहता देखना....
अपने भारत का ऐसा वेश।
महंगाई, गरीबी, शोषण से बढ़कर जनता के
हो गुलामी का फिर से क्लेश।।
अंतरात्मा का यह चीत्कार,
केवल मेरे मन में ही नहीं उठ रहा था।

प्रत्येक सच्चे भारतीय का हृदय
चीख-चीखकर उससे कह रहा था।
"उठ, तू उठ कर फिर से भारत को
उसका सच्चा स्वरूप दिला दे।
पुनः इतिहास बदल, दुनिया को
अपनी ताकत दिखला दे।"
आख़िर मार्च सतहत्तर में इस अन्तराल ने
अपना रौद्र रूप दिखा दिया!!!

नृशंस, अत्याचारी बर्बर को उसका
सही स्थान दिखा दिया!!!
जन-शक्ति का प्रचंड दावानल
जब चारों तरफ फैल उठा!!
तानाशाही क्रूरता का किला
उसकी लपेट में जल उठा... !!
अब भी मैं रेलगाड़ी में जाता हूँ,
और अपने देश का सौन्दर्य निहारा करता हूँ,

उससे भी बढ़कर जनता को

बार-बार मस्तक नवाया करता हूँ,
इसी ने तो पुनः अपने देश को
उसका सच्चा स्वरूप दिला दिया।
भगवान राम के महान आदर्श को
फिर से जीवित कर दिखला दिया।।

धन्य! धन्य! है ये पुत्र जिन्होंने
पुत्रों का कर्तव्य अदा किया!!!

विशेषः जयप्रकाश नारायण के प्रति आदरांजलि में लिखी कविता (सन् 1978)

- स्वर्गीय श्री महीप-प्रशांत
"प्रशांत नदीश के सीप" से उद्धृत

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका "आँचल" के वर्ष 2018-19 के चतुर्दशम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए अनेकानेक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं अर्थपरक हैं। रचनाकारों की प्रकाशित रचनाएँ उनकी हिंदी भाषा के प्रति अभिरूचि को व्यक्त करती है। पत्रिका की साज सज्जा भी अत्यन्त सराहनीय है। श्री आनंद कुमार सिंह का लेख "हमारी राजभाषा हिंदी", श्री नित्यानंद पाठक का लेख "जीवन: एक संघर्ष", श्री तरूण बजाज की कविता "खुद से बातें", श्री तुषार शंकर बने की कविता "यादें" एवं श्री इमरान खटिक की कविता "ये अहसास" आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। उत्कृष्ट साज-सज्जा एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

-कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा: भुवनेश्वर-751001

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्र संख्या-एमएबी-1/प्रशा./हिंदी पत्रिका प्रेषण/2019-20/1527 "आँचल" के चतुर्दशम् अंक वर्ष 2018-19 की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री अभिनन्दन अग्रवाल का लेख "अटल बिहारी वाजपेयी - एक महान राजनेता और कवि", श्री तरूण बजाज का लेख "अठखेलियाँ खेलता मन" एवं श्री इमरान खटीक की कविता "ये एहसास" बहुत ही अच्छी लगी। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन, संकलन हेतु संपादक मंडल व रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

- प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) का कार्यालय, बिहार, पटना।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका आँचल के चतुर्दशम् अंक (अक्टूबर, 2018 से मार्च, 2019) की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सुपाठ्य, उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर स्वर्गीय श्री महीप प्रशांत (शब्दों के उस पार से), सुश्री चैताली बने (नहीं भूलेंगे हम), श्री इमरान खटीक (ये एहसास) एवं श्री अभिनंदन अग्रवाल (अटल बिहारी वाजपेयी : एक महान राजनेता और कवि) की रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय है।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

- भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल)

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' का 14वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। श्री नित्यानन्द पाठक की "जीवन एक संघर्ष", श्री जिज्ञासु पन्त की "सफरनामा", सुश्री चैताली बने की "नहीं भूलेंगे हम" सभी रचनाएं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशनकेलिएबधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

- कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) चण्डीगढ़ -160017

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" के 2018-19 के चतुर्दशम् अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली रोचक एवं उच्चकोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारी किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री अभिनंदन अग्रवाल का लेख "अटल बिहारी वाजपेयी – एक महान राजनेता और कवि", श्री अंकित शर्मा की कविता "एक कदम स्वच्छता की ओर", श्री अमित कुमार सिन्हा की कविता "गुमशुदा कवि" एवं श्री विनोद कुमार कुमावत की कविता "सत्ता" विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय के पत्र क्रमांक एमएबी-1/प्रशा./हिंदी पत्रिका प्रेषण/2019-20/1546 दिनांक 12.12.2019 के साथ संलग्न हिंदी पत्रिका "आँचल" के चतुर्दशम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं न केवल उत्कृष्ट हैं अपितु अत्यन्त ही सराहनीय हैं। हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा प्रस्तुत् "भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि श्रृंखला" एवं श्री नित्यानन्द पाठक की रचना "मुंबई और बूढ़ा" अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।

पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

- **महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय का कार्यालय, मध्यप्रदेश**

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आँचल" के चतुर्दशम् अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपको पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

- **प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बंगलौर - 560001**

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) तथा रा.भा. नियम, 1976 (यथासंशोधित 1987 एवं 2011, 2015)

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी 1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) तथा रा.भा.अधि. 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं नियम से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण नियमों की जानकारी निम्नलिखित है-

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर: हिन्दी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7-आवेदन, अभ्यावेदन आदि का उत्तर: कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)–सेवा संबंधी आदेश या सूचना: यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाही भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

अधिनियम धारा 3 (3)–दस्तावेज, मैनुअल आदि जो द्विभाषी होने चाहिए: निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाएँ - संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति। संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र। संविदाओं और करारों का निष्पादन, लाइसेंस, परमिट और टेंडर के लिए नोटिस और प्रारूप।

नियम 11-(क) - सभी मैनुअल, संहिता और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप में मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाए या प्रकाशित किया जाए। **(ख)** - केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों पत्र-शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हो। **(ग)** - केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, भाषाओं में लिखी जायें व मुद्रित या उत्कीर्ण की जायें। यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह साधारण या विशेष आदेश द्वारा केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है। इस परन्तुक के अधीन छूट के लिए कोई प्रस्ताव उसका पूरा औचित्य दिखाते हुए राजभाषा विभाग को भेजा जाए।

नियम 10 कार्यसाधक ज्ञान: यह समझा जाएगा कि किसी कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, यदि उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या ऊँची परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है, या केन्द्रीय सरकार के हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या यदि केन्द्रीय सरकार द्वारा किसी विशिष्ट पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस बारे में विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या वह राजभाषा नियम के संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 9 –प्रवीणता: किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है, यदि उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे ऊँची कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के बराबर या उससे ऊँची किसी परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या वह राजभाषा नियम में संलग्न प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10 (4) एवं 8 (4): केंद्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तुतकर्त्ता: हिन्दी प्रकोष्ठ

राजभाषा हिन्दी की प्रगति की समीक्षा
(अप्रैल 2020 से मार्च 2021)

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट कागजात: उक्त नियम के अंतर्गत इस वर्ष के दौरान कुल **148** कागजात जारी किये गए। इस कार्यालय में कार्यालय-आदेश, परिपत्र, सूचना, अनुस्मारक आदि सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी किये जाते हैं।

2. हिन्दी में प्राप्त पत्रों की स्थिति (राजभाषा नियम - 5) - प्राप्त पत्रों का जवाब शत्-प्रतिशत हिन्दी में देना अनिवार्य है। इस कार्यालय में हिंदी में प्राप्त पत्रों के जवाब केवल हिंदी में ही दिए जाते हैं। इस वर्ष में हिन्दी में प्राप्त पत्रों की संख्या **370** रही। इनमें से **83** के जवाब हिन्दी में दिए गए तथा शेष **287** पत्र फाइल किए गए।

3. अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की स्थिति: इस वर्ष में कार्यालय को "क" तथा "ख" क्षेत्र से अंग्रेजी में कुल **417** पत्रों की प्राप्ति हुई। इनमें से **13** पत्रों के जवाब अंग्रेजी में तथा **66** पत्रों के जवाब हिंदी में दिया गया तथा शेष **338** पत्र फाइल किए गए।

4. कार्यालय द्वारा प्रेषितपत्र: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** एवं **ख** क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साथ क्रमशः **90 प्रतिशत** एवं **90 प्रतिशत** पत्राचार हिन्दी में करना तथा **ग** क्षेत्र के साथ **55 प्रतिशत** पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। इस कार्यालय द्वारा इस वर्ष में **क, ख एवं ग** क्षेत्रों को प्रेषित पत्रों का प्रतिशत **क्रमशः 97.46, 98.47 एवं 97.06** रहा।

5. हिन्दी में लिखी गईं टिप्पणियों की स्थिति: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** क्षेत्र में **75 प्रतिशत, ख** क्षेत्र में **50 प्रतिशत** तथा **ग** क्षेत्र में **30 प्रतिशत** टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखा जाना अनिवार्य है। इस तिमाही में कुल **1590** टिप्पणियाँ लिखी गईं, जिनमें से हिन्दी में **1286** तथा शेष **234** अंग्रेजी में थीं। इस कार्यालय की वर्तमान तिमाही के हिंदी में टिप्पण लेखन का **प्रतिशत 84.60** रहा जो कि लक्ष्य से अधिक है।

6. अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका "आँचल" का प्रकाशन: श्री पी. वी. हरि कृष्णा, प्रधान निदेशक द्वारा कार्यालय की गृह-पत्रिका **"आँचल"** के पन्द्रहवें एवं सोलहवें ऑनलाइन अंक का विमोचन **सितम्बर 2021** में किया गया।

7. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन: इस कार्यालय द्वारा प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-II, मुंबई के साथ संयुक्त रूपेण हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन अनिवार्यतः किया जाता है। अप्रैल से जून 2020 की तिमाही में **07.06.2020** को, जुलाई से सितम्बर, 2020 की तिमाही में **07.09.2020** को, अक्टूबर से दिसम्बर, 2020 तक की तिमाही में **04.12.2020** को तथा जनवरी से मार्च, 2021 की तिमाही में दिनांक **23.01.2021** को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

8. पारंगत प्रशिक्षण का आयोजन: राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित हिंदी प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्यालयीन कार्यों एवं प्रशिक्षण में समन्वय स्थापित करने के लिए कार्मिकों के समय एवं ऊर्जा की बचत करने के उद्देश्य से यह कार्यालय प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षिण के लिए नामित करता है। वर्तमान में **जुलाई से नवंबर 2021** के सत्र में भी इस कार्यालय के **3** कार्मिकों को पारंगत का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। भविष्य में भी पारंगत प्रशिक्षण संबंधी सत्रों का आयोजन करने का प्रयास किया जाएगा।

9. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मुंबई: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय) की दिनांक **25.05.2021** को ऑनलाइन आयोजित राजभाषा की छमाही बैठक में इस कार्यालय की कार्यालय प्रधान श्री पी.वी. हरिकृष्णा, प्रधान निदेशक महोदय ने सहभागिता की।

10. हिन्दी प्रशिक्षण: इस कार्यालय के हिंदी प्रशिक्षण हेतु पात्र कार्मिकों में से **18** कार्मिकों को **पारंगत** प्रशिक्षण प्राप्त है जबकि **03** कार्मिक पारंगत प्रशिक्षणाधीन हैं तथा **27 कार्मिक हिंदी में प्रवीणता प्राप्त** हैं जिन्हें प्रति वर्ष कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर से हिंदी में कार्य करने हेतु **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4)** के अंतर्गत आदेश दिया जाता है। इस कार्यालय के शेष अन्य सभी कार्मिकों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त है।

प्रस्तुतकर्त्ता: हिन्दी प्रकोष्ठ

विविधा

(अवधि: अप्रैल, 2019 से मार्च, 2020)

नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्री ज्ञानेन्द्र वर्मा	लेखापरीक्षा अधिकारी	01.04.2019
2.	श्री दीपक कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	14.05.2019
3.	श्री नितिन कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	22.10.2019
4.	श्री पी. वी. हरिकृष्णा	प्रधान निदेशक	30.10.2019

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्री सुरेश कुमार	लेखापरीक्षक	26.09.2019
2.	श्री अभिनंदन अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.12.2018
3.	श्री अंकित शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	01.01.2020
4.	श्री विनोद कुमावत	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	01.01.2020
5.	श्री रोहित सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	01.01.2020
6.	श्री राहुल चौधरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	01.01.2020
7.	श्री गणपत बिर्जे	लेखापरीक्षक	01.01.2020
8.	श्री प्रवीण नफाड़े	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	01.01.2020
9.	श्री हरीश कुमार	आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक ग्रेड-बी	17.02.2020

सेवानिवृत्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्री वी. एस. देसाई	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.10.2019
2.	श्री भालचन्द्र जाधव	एम टी एस	31.05.2021
3.	श्रीमती कैथरीन वर्गीज	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2021

भारत सरकार में कार्य करते हुए अपनी पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं सच्ची श्रद्धा के साथ जनता की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की **"आँचल"** आभारी है। **"आँचल"** परिवार आपके स्वस्थ एवं मंगलमय दीर्घायु जीवन की कामना करता है। कार्यालय के **"आँचल"** में आपका एक विशिष्ठ स्थान है एवं सदैव रहेगा। **"आँचल"** परिवार आपका हार्दिक अभिनंदन करता है।

झलकियाँ

कार्यालय के प्रधान निदेशक महोदय श्री पी. वी. हरिकृष्णा खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कार्मिक को सम्मानित करते हुए।

कार्यालय के उपनिदेशक महोदय श्री वी. एस. के. नम्बूदिरी खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कार्मिक को सम्मानित करते हुए।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम को उत्साह के साथ मनाते हुए कार्मिकगण

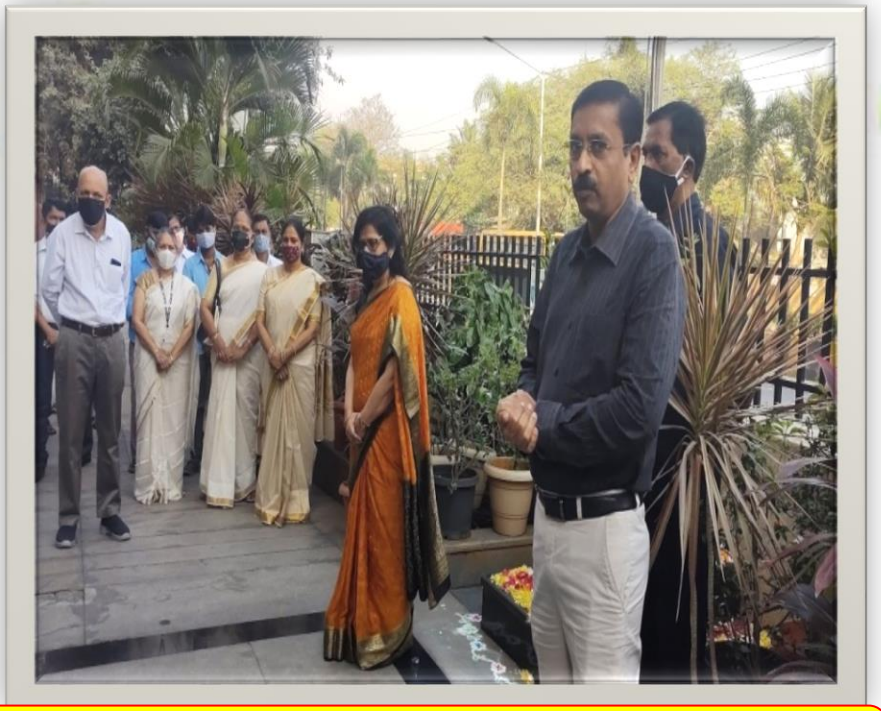

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम की झलकी

प्रधान निदेशक महोदय द्वारा श्रीमती कैथरीन वर्गीज, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी को सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मारिका देकर सम्मानित किया गया।

उप निदेशक महोदय द्वारा श्रीमती कैथरीन वर्गीज, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी को सेवानिवृत्ति के अवसर पर उपहार देकर सम्मानित किया गया।

उप निदेशक महोदय द्वारा श्री भालचन्द्र जाधव, एम टी एस को सेवानिवृत्ति के अवसर पर उपहार देकर सम्मानित किया गया।